Volume: 4 Issue: 7 Pages: 32-34

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पारसी रंगमंच एवं लोकप्रिय हिंदी सिनेमा का योगदान

[*1] डॉ. रवि कृष्ण कटियार

[*1] पीएच. डी., हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 12/ June/2025
Accepted: 13/July/2025

***Corresponding Author**
डॉ. रवि कृष्ण कटियार
पीएच. डी., हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

सारांश

हिन्दी से यहाँ तात्पर्य जनसामान्य द्वारा रोजमर्रा में प्रयोग किये जाने वाले उन जीवंत शब्दों अथवा वाक्यों से है जिसे सामासिक संस्कृति की तर्ज पर नारायण प्रसाद बेताब कुछ यूँ लिखते हैं कि-

'न ठेठ हिन्दी, न खालिस उर्दू, जुबान गोया मिली जुली हो,
अलग रहे दूध से न मिसरी डली, डली दूध में घुली हो।'

उक्त विषयक हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पारसी रंगमंच ने अभूतपूर्व योगदान दिया है और उसी क्रम में लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा भी योगदान दे रहा है। हिन्दी भाषा के वैश्विक स्तर पर होने वाले व्यापक प्रसार में जहाँ एक ओर प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया ने महती भूमिका अदा की है, वहीं हिन्दी फिल्मों का योगदान भी उत्कृष्ट है। आज हिन्दी लगभग सम्पूर्ण भारत में बोली और समझी जाने वाली भाषा बनने के क्रम में एक विश्व-व्यापी भाषा बनने की ओर भी निरन्तर अग्रसर है। हिन्दी फिल्मों के गाने, नृत्य, संवाद हर जगह लोकप्रिय हो रहे हैं। हिन्दी की व्यापारिक लोकप्रियता और प्रभाविकता का आलम यह है कि आज विश्व स्तर पर कोई भी फिल्म बनें उसका हिन्दी भाषी रूपान्तरण उपलब्ध हो जाता है। जन सामान्य की हिन्दी को जनमानस में लोकप्रिय बनाने में पारसी रंगमंच एवं लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हिन्दी-पारसी रंगमंच ने जिस हिन्दी भाषा को भारतव्यापी बनाया था आज हिन्दी सिनेमा ने उसे विश्वव्यापी बना दिया है। आज हिन्दी भाषी फिल्मों को डब करके एवं विदेशी फिल्मों को हिन्दी में डब करके एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को अंजाम दिया जा रहा है, जिससे हिन्दी के भाषिक महत्व को एक विश्व स्तरीय विश्वसनीयता प्राप्त हो रही है।

मुख्य शब्द: लोकप्रिय, हिन्दी-पारसी रंगमंच, सामासिक संस्कृति, लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा, आधुनिक/उत्तर-आधुनिक समाज

प्रस्तावना:

मूल आलेख: हिन्दी से यहाँ तात्पर्य भाषा-मात्र से नहीं बल्कि जनसामान्य द्वारा रोजमर्रा में प्रयोग किये जाने वाले उन जीवंत शब्दों अथवा वाक्यों से है जिसे सामासिक संस्कृति की तर्ज पर नारायण प्रसाद 'बेताब' कुछ यूँ लिखते हैं कि- 'न ठेठ हिन्दी, न खालिस उर्दू, जुबान गोया मिली जुली हो,

अलग रहे दूध से न मिसरी डली, डली दूध में घुली हो।'

उक्त विषयक हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पारसी रंगमंच ने अभूतपूर्व योगदान दिया और उसी क्रम में लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा भी योगदान दे रहा है। यहाँ पर एक दिलचस्प किस्से का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है जिसका सम्बन्ध आगा हश्र के शुरूआती दिनों से है जब वे खालिस उर्दू में लिखा करते थे और बनारस आने पर अल्फ्रेड कम्पनी के पास अपना लिखा हुआ नाटक लेकर पहुँचे, तब कुछ यूँ हुआ जिसका जिक्र लक्ष्मीनारायण लाल ने किया है- ''तभी बनारस में बम्बई की अल्फ्रेड कम्पनी ने अपना डेरा जमाया था। उस समय अल्फ्रेड के नाम से बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, पटना, मेरठ, दिल्ली आदि हिन्दी नगरों में जादू फैल जाता था। उस समय के नाटककार थे- अहसन लखनवी। उन्हीं के नाटक 'चन्द्रावली' के आधार पर मोहम्मद शाह ने 'आफ्ताबे मुहब्बत' की रचना की, जिसे अल्फ्रेड कम्पनी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि ''हमें हिन्दी-संस्कृति का नाटक हिन्दुस्तानी जबान में चाहिए।''1 इस किस्से से स्पष्ट होता है कि पारसी रंगमंच ने एक सपाट रवैया अपना रखा था कि अगर जनमानस तक पहुँच बनानी है तो उनकी ही भाषा में बात समझनी-समझानी होगी, जो कि व्यावसायिकता हेतु प्राथमिक शर्त थी। पारसी रंगमंच के नाटकों में शेरो-शायरी की भाषा इतनी सहज, सरल थी कि उसकी तुकान्तता लोगों की बातों का हिस्सा बन जाती थी और अनायास ही जनमानस में फैल जाती थी। महमूद मियाँ, 'बनारसी' लिखते हैं-

'राजी रखूँगी मैं तुम्हें हरदम मेरी जान
आँखों सें लाऊँगी बजा तेरा नित फरमान
रात रहो मेरे पास तुम, दिन को करना सैर
और को देना दिल नहीं जान की चाहो जो खैर।'

('बदरेमुनीर' नाटक से)

मुन्शी विनायक प्रसाद 'तालिब' अपने नाटक 'दिलेर दिलशेर' में लिखते हैं-

'अब दिल कहीं लगाने के काबिल नहीं रहा,
जिस दिल पै मुझको नाज था, वह दिल नहीं रहा।'

उपरोक्त दोनों पदों पर गौर करने पर स्पष्ट होता है कि आज भी भाषा की रवानगी एवं शायरी का शुरूर फिल्मों में हू-ब-हू अंदाज में मिल जाता है। फिल्मों की जो शायरी, शेर, गजलें लोकप्रिय हुई वे हिन्दुस्तानी भाषा के ही रंग लिये हुए रही हैं। यहाँ पर जगजीत सिंह जी की गायी एक ग़जल की पंक्तियां इसी अंदाज को बयां करती है-

'नहीं मिलते हो मुझसे तुम
तो सब हमदर्द हैं मेरे
जमाना मुझसे जल जाये
अगर तुम मिलने आ जाओ
तमन्ना फिर मचल जाये
अगर तुम मिलने आ जाओ'

भारत में बनने वाली आधे से अधिक फिल्में हिन्दी भाषा में बनती हैं, जबकि लगभग प्रत्येक अहिन्दी भाषी फिल्म का सब-टाइटल्स आदि के द्वारा हिन्दी भाषा में रूपान्तरण मिल ही जाता है। यह स्थिति बताती है कि हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता का आलम आज क्या है। विश्व में बनने वाली हर चौथी फिल्म का सम्बन्ध कहीं न कहीं हिन्दी भाषा से अवश्य है। चूँकि हिन्दी भाषी दर्शकों की बहुलता एवं दिलचस्पी फिल्मों में अत्यधिक रही है और इस दर्शक वर्ग का सौन्दर्यशास्त्र पारसी रंगमंच से विकसित होकर आया है, इस लिहाज से इस दर्शक मण्डली को अतिनाटकीयता, अतिरंजिता, गीत, नृत्य, आश्चर्य, भव्यता आदि का मिश्रण फिल्मों में भाता है। यही कारण है कि आज दक्षिण भारत की फिल्मों का हिन्दी रूपान्तरण ज्यादा देखने को मिलता है, क्योंकि दक्षिण भारत की लोकप्रिय फिल्मों ने स्टंट आदि भव्यता विषयक चित्रण को ज्यादा महत्व दिया है। बाहुबली, पुष्पा, मगधीरा, के0जी0एफ0, आर0आर0आर0 इत्यादि फिल्में इसका जीवंत उदाहरण हैं जिन्होंने कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में व्यवसाय, संख्या के आधार पर पर्याप्त लोकप्रियता ग्रहण की है और इसके पीछे हिन्दी भाषा की सरल, सुगम, सहज, शब्दावली है जो कि निरंतर गतिशील है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के मुख पत्र 'रंग प्रसंग' में प्रकाशित होता है कि- ''भारत में सिनेमा की लोकप्रियता से पहले पूरे देश में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन पारसी थिएटर था। अपनी ऐतिहासिकता में यह ऐसा भारतीय रंगमंच था, जो पूरे भारत में व्याप्त था और उसमें अनेक भारतीय भाषाओं, जैसे हिन्दी, गुजराती, उर्दू, बंगला और मराठी आदि का भी रंगमंच शामिल था।''2

वर्तमान में देश के जनसमुदाय में व्यापक स्तर पर प्रचलित मनोरंजन का सर्व-सुलभ साधन निःसंदेह भारतीय सिनेमा ही है, और इसमें भी खासकर हिन्दी भाषा आधारित फिल्में हैं। मसलन देश के हर कोने मे हिन्दी फिल्में देखी एवं दिखायी जाती हैं। हिन्दी भाषी फिल्मों की इस लोकप्रियता के चलते आज देश-विदेश में भी हिन्दी भाषा के प्रसार-प्रचार को भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है।

आज दुनियाभर में संचार, शिक्षा, व्यापार तथा कूटनीति के क्षेत्र में हिन्दी भाषा ने एक विश्वसनीय पहचान बनायी है। यू0के0, सूरीनाम, मॉरीशस, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, यहाँ तक कि अमेरिका में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग शुरू हो चुका है। दुनियाभर में रिलीज होने वाली पहली भारतीय हिन्दी फिल्म महबूब खान द्वारा निर्देशित 'आन' (1952) थी, जो कि 17 भाषाओं में तथा 28 देशों में प्रदर्शित की गई थी। ''1960 के दशक तक पूर्वी अफ्रीका का क्षेत्र भारतीय फिल्मों के लिए सबसे बड़े विदेशी निर्यात बाजारों में से एक था, जहाँ कई भारतीय फिल्मों की वैश्विक कमाई का लगभग 20-50 प्रतिशत हिस्सा आता था।''3 1980 के दशक में भारतीय फिल्मों के लिए सबसे बड़ा विदेशी बाजार सोवियत संघ बनकर उभरा। 'आवारा' (1951), डिस्को डांसर (1982), इन दो फिल्मों ने ही दर्शकों की संख्या के मामले में लगभग 100 मिलियन टिकट बेचे थे।

सोवियत संघ के विघटन के उपरान्त तथा बाजारवाद, पूँजीवाद, वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण आदि सार्वभौमिकघटनाओं के चलते हिन्दी सिनेमा ने अद्यतन निरन्तर प्रगति ही की है। आज भारतीय हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता यह है कि शाहरूख खान अभिनीत 'पठान' (2023), सौ से ज्यादा देशों में रिलीज की गई। हम आपके हैं कौन (1994), दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे (1995), कुछ-कुछ होता है (1998), ताल (1999), लगान (2001), थ्री इडियट्स (2009), धूम-3 (2013), पी0के0 (2014), दंगल (2016), हिन्दी मीडियम (2018), इत्यादि हिन्दी फिल्मों ने हिन्दी भाषी सिनेमा की लोकप्रियता को उसी प्रकार सात समुन्दर पार पहुँचाया है जैसे पारसी रंगमंच ने हिन्दी भाषी पारसी रंगमंच को अखिल भारतीय परिदृश्य प्रदान किया था।

हिन्दी भाषा के वैश्विक स्तर पर होने वाले व्यापक प्रसार में जहाँ एक ओर प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया ने महती भूमिका अदा की है, वहीं हिन्दी फिल्मों का योगदान भी उत्कृष्ट है। आज हिन्दी लगभग सम्पूर्ण भारत में बोली और समझी जाने वाली भाषा बनने के क्रम में एक विश्व-व्यापी भाषा बनने की ओर भी निरन्तर अग्रसर है। हिन्दी फिल्मों के गाने, नृत्य, संवाद हर जगह लोकप्रिय हो रहे हैं। हिन्दी की व्यापारिक लोकप्रियता और प्रभाविकता का आलम यह है कि आज विश्व स्तर पर कोई भी फिल्म बनें उसका हिन्दी भाषी रूपान्तरण उपलब्ध हो जाता है। ''हिन्दी की फिल्मों, गानों, टी0वी0 कार्यक्रमों ने हिन्दी को कितना लोकप्रिय बनाया है इसका आकलन करना कठिन है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की कि हिन्दी फिल्मों को देखकर तथा फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली।''4 हिन्दी सिनेमा द्वारा लोकप्रियता हेतु अपनायी गयी नृत्य-गायन-संवाद (डॉयलाग) की यह त्रयी, पारसी रंगमंच का आधारभूत मूल्य-बोध है, जिसके माध्यम से इसने जनमानस में हिन्दी भाषा के प्रति रूचि एवं भाषा की एक समझ का भी विकास किया था।

'आज मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, पैसा है.... तुम्हारे पास क्या है?... मेरे पास माँ है। (फिल्म: दीवार, 1975)

'जिनके घर शीशे के होते हैं, वो दूसरों के घर पत्थर नहीं फेंका करते।' (फिल्म: वक्त, 1965)

'जली को आग कहते हैं, बुझी को राख कहते हैं, जिस राख से बारूद बने उसे विश्वनाथ कहते हैं।' (फिल्म: विश्वनाथ, 1978)

उपर्युक्त डॉयलाग उदाहरण हैं ऐसे संवादों के जो कलाकारों द्वारा आकर्षक अंदाज एवम् प्रभावशाली तरीके से इस प्रकार पेश किये गये हैं जो कि आज भी लोगों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं। भाषा की रवानगी के कारण अहिन्दी भाषी लोग भी इन्हें सीखकर प्रयोग करते हैं और इसमें एक भाषायी समझ का विकास होता है। इसी तरह पारसी रंगमंच का एक शेर लोगों को याद सा हो गया था-

'मेरा राहतमहल प्यारे
तुम्हारे दिल का कोना है।
मेरा जेवर फ़क़त तुम हो,
न चाँदी है न सोना है। (नाटक: सिल्वर किंग, आगा हश्र)

दंगल का डायलॉग हो या पानसिंह तोमर के संवाद गैंग्स ऑफ वासेपुर की आँचलिकता हो, बैंडिट क्वीन की क्षेत्रीयता, लोकप्रिय सिनेमा एक रोमांचित शैली में इन लोकप्रचलित भाषाओं, बोलियाँ का प्रदर्शन करता है। 'म्यारी छोरी के छोरों से कम है (फिल्म दंगल)!' काये दद्दा, अरे हम तो तोसे दद्दा दद्दा कहात ते, दद्दा दद्दा ऐसी का गलती है गई हमसे!, अरे आके मार साला सीने पे गोली, पाण्डेय गौरीशंकर (फिल्म : हासिल), इन संवादों की लोकप्रियता बताती है कि लोकप्रिय सिनेमा किस प्रकार बोलियों-भाषाओं को संरक्षित कर प्रसारित करता है। कनपुरिया टोन का असर आज हम ज्यादातर लोकप्रिय सिनेमा पर देख सकते हैं। बनारसी अंदास, कनपुरिया टशन, बिहारी भौकाल, दिल्ली-मुम्बई का जश्न लिए लोकप्रिय सिनेमा एक विशेष प्रकार की भाषा शैली का प्रचार-प्रसार जनमानस में करता है।

आज हिट होने वाली कतिपय फिल्मों में हम देखते हैं कि हिन्दी के साथ अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती, बिहारी आदि भाषाओं के संवाद भी धड़ल्ले से प्रयोग किये जाते हैं और दिलचस्प तथ्य यह है कि इन भाषाओं के प्रयोग से फिल्म में नीरसता या उदासीनता न आकर एक प्रकार की विविधता एवं रोमांच ही उत्पन्न होता है। आज के आधुनिक/उत्तर-आधुनिक समाज में एक ही घर में कई धर्मों, जातियों के लोग सहज भाव से रहना शुरू कर चुके हैं। दोस्तों के समूह अब विविधता लिए होते हैं, कोई हिन्दू कोई मुस्लिम, कोई सिख या कहें कि कोई बंगाली है, बिहारी है तो कोई हिन्दी, मराठी या अन्य भाषी है। ऐसे में भाषा के स्तर पर विविधता लिए हुए फिल्में अपना एक अलग महत्व रखती हैं। मसलन 'चक दे इण्डिया' फिल्म में देश के विभिन्न प्रदेशों की महिला हॉकी खिलाड़ियों की बोलियों एवं क्षेत्रीय विविधताओं-विशेषताओं को बहुत प्रसिद्धि मिली। हालाँकि हिन्दी बहुलता के होने के कारण इन फिल्मों को हिन्दी सिनेमा से जरूर जोड़ा जाता रहा है मगर सत्य यह है कि इन फिल्मों की देशव्यापी लोकप्रियता का एक बहुत बड़ा कारण इन फिल्मों में भाषायी विविधता अथवा विभिन्न शैलियों का सजग प्रयोग ही है। अपने समावेशी चरित्र के कारण जिस प्रकार पारसी रंगमंच ने हिन्दी के रंगों को हर जगह बिखेरे था आज वही काम हिन्दी सिनेमा करके लोकप्रिय हो रहा है।

हिन्दी फिल्मों के संगीतकारों, गायक-गायिकाओं का भी एक अहम् स्थान है। कव्वालियों, गजलों, शास्त्रीय संगीत, लोकगीतों की धुनों, पश्चिमी धुनों आदि का कर्णप्रिय संगम बनाकर हमारे संगीतकारों ने बेहतरीन सुरों को सजाया, जिससे न जाने कितने लोगों को गानों की सिर्फ धुने सुना दो वो गीत बता देंगे और इन्हीं धुनों-सुरों में आवाज का जादू घोला हमारे हिन्दी गानों को घर-घर तक पहुँचाने वाले महान गायक-गायिकाओं ने। गीतकार-मजरूह सुल्तानपुरी, आनन्द बख्शी, गुलजार, साहिर लुधियानवी आदि। संगीतकार-शंकर-जयकिशन, एस0डी0 बर्मन, नौशाद, लक्ष्मीकांत, प्यारेलाल, प्रीतम आदि। गायक-मुकेश, लता जी, आशा भोसले, रफी साहब, किशोर दा, श्रेया घोषाल, अलका याज्ञनिक, कुमार शानू, सोनू निगम आदि महान प्रतिभाओं ने हिन्दी भाषा के गानों को अपनी सुरीली आवाज में पिरोकर जन-मन में पहुँचाया।

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि जन सामान्य की हिन्दी को जनमानस में लोकप्रिय बनाने में पारसी रंगमंच एवं लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हिन्दी-पारसी रंगमंच ने जिस हिन्दी भाषा को भारतव्यापी बनाया था आज हिन्दी सिनेमा ने उसे विश्वव्यापी बना दिया है। आज हिन्दी भाषी फिल्मों को डब करके एवं विदेशी फिल्मों को हिन्दी में डब करके एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को अंजाम दिया जा रहा है, जिससे हिन्दी के भाषिक महत्व को एक विश्व स्तरीय विश्वसनीयता प्राप्त हो रही है।

सन्दर्भ सूची:

1. लाल, लक्ष्मीनारायण (1972), पारसी-हिन्दी रंगमंच, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स,
2. शर्मा, अजय कुमार (अगस्त, 2024), रंग प्रसंग, अंक 56, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, पृ0 70
3. फेयर, लौरा (2010), तंजनिया में दर्शकों की पसन्द, 1950-1980 के दशक, ओहियो प्रेस, एथेन्स।
4. किकुची, तोमोको (सितम्बर 2019), दुनिया के हर कोने में है हिन्दी, सम्पादकीय, हिन्दुस्तान
5. सिंह, रणबीर (2021), पारसी थिएटर, सेतु प्रकाशन, दिल्ली,
6. गुप्त, सोमनाथ, पारसी थियेटर : उद्भव और विकास, 2022, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
7. पारख, जवरीमल्ल, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, 2023, नई दिल्ली-02, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड।
8. ब्रहमात्मज, अजय, सिनेमा समकालीन सिनेमा, 2012, वाणी प्रकाशन, दिल्ली-02
9. प्रो0 रमा, हिन्दी सिनेयात्रा : लोकप्रिय सिनेमा, 2024, नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली-32
10. रतन थियम, वामन केन्द्र, कार्ति जैन, हेमा सिंह (अंक 41, 2013) रस प्रसंग, दिल्ली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।
11. बहुवचन (हिंदी का अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका), सं0 अशोक मिश्र, अंक : 39 (अक्टूबर-दिसम्बर - 2013)
12. भाषा (भारतीय एवं विश्व सिनेमा विशेषांक), सं0 राकेश कुमार (अंक 291, वर्ष 59) जुलाई-अगस्त, 2020, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार।
13. नया ज्ञानोदय, साहित्य वार्षिकी, 2017, भारतीय ज्ञानपीठ।
14. हँस (हिन्दी सिनेमा के सौ साल), सं0 संजय सहाय, फरवरी, 2013.